

गव
बगवान

पदना

मुरच

मिदीर

पुठ

हलद

बेलीर

श्रावत

कसुर

प्रियंगु

विमिशिषु

निर

निर

ककियासे

पुष्पगमेल

तालीस

ठ



श्रीश्रीश्री वीरमं

नमो नमो नमो

मं ३

मं ३

नमो नमो

१०००

मं ३

ASHA AP

1169

ASHA AP

ॐ
हिं

तेनुल तो १

चित्रक तो १

हलद

इमुन

वेदचि

सेधु

पिण्यासामं

अजमेद

बोसिखौ

मलच

पिपीर

भूठ तोला १

१ पोखुयायगु

अतिली

नवात

लवाडू

मी ५

मी ४

मी २



ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः
गते जनानां जगदात्मना
जप कृता सुमं संपन्ननाथ
सायं श्री नारायणं नमस्कृत्य
स्वाहा ॥ धारा ॥ ५००० ॥

मरच

डुडुमाधि

खलासाति

अजनीर

पानकपथ्यावासलजुल

गजि मी ३

भूठ तो १

मोहर

पिपीर

सेधु

इमुन

सारे

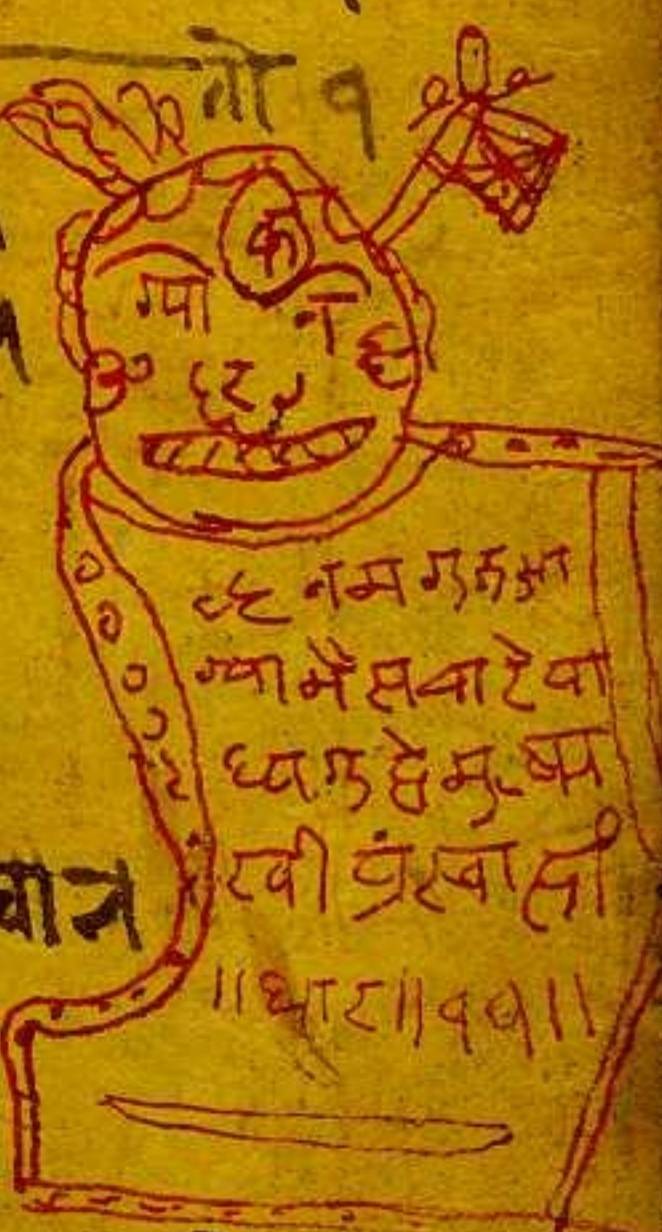
धतिस्वान

लवाडू

वेतचि

जिल

तो १



ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः
गतां भूतानां जगदात्मना
जप कृता सुमं संपन्ननाथ
सायं श्री नारायणं नमस्कृत्य
स्वाहा ॥ धारा ॥ ५००० ॥

कफर्या भीत जंग वास

मुसवरल — मी ६

वेदवि —

लोहागा —

अककीरा

कदु कि

पिष्यजामुल

पुठ

जगीहलद

पिपील

मलन

ईमुन

खोतसाति — मी ६

छाकपोल विमता

नारुपु

ज्यापुमु

मास

सोपोसो



ईमुन

वोसिखलि

कवसि किउ

पुठ

अलापु

तिमिपु

छाकपोल विमता

जिकोल — मी ५

पिपील

पुठ

नारुपु

वोपु

ज्यापुडकरु — मी ४

हकजिल — मी ४

वोसिखलि

अलापु

ईमुन

कवसि कि

जाहा
मधकोर
कलायपु
चनसुरपु
सोकोसोक
तिसिपु
गुलाजा
गुचुखा
वेलाशि
मेजा
काकोशि

मी ४

मी ४

विषसोधनघालया
जिह्वा सुवर्णसारया मत
रध
अजुंसि
पथकुं कुम
तिसि
ओलसि

काथधे कर्कव्यो
मी ४ काथ
तोला २ कल्क

जिलस्वाहल तोला २	
निषहल	सिलाधुति
पठोल	उडकोलसिते
कलायपु	ला २
सेध	इचेकी १
इदिमि	जातिका दिघाल
कुट	यां कदिया जि
काचिहरु	५० सुवर्णसार
मिक्तिसि	या मत
कटुकि	
मन्या	
कोसि	
गुलाध	
हलल	
उत्तरस्वान	

वनराभातैनी नीलकण्ठ
मता॥

यूकाचैकी पु १

माद्येल अता २

अलपातयातिपु ४

गंधक म ३

सिधल

रुसिताल

मनसिल

काचिरुत

गेरु

पलका म

बाधल

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1169

दुःखनिवारणाय -- कादहननाममन्त्रावलाघवप्रणामप्रकरणसंख्यायके
लाहलसकलेब्रह्माविवेचनप्रणाम. मन्त्रमनुद्विगिरालिखितनामयोगाले
खिताय. पितालज्जयनाथे. अमिन्मवि क्रमात्तसु रद्वेविप्रलयेवाहुष
निरालंक्रतायसंदिभिरालंक्रताय अंगाले अमिन्मनामलाकसेनाप्रण
निरालंक्रताय दशकंधकंठवेध्याय. रामेष्टमलाप्रालुलादाया

[illegible]

नमोः श्रीरुनुमानजायकवचस्त्रियते ॥ अजिनि स्वनदीरु
नवीराय नमः ॐ अस्य श्रीपंचमुखीवीररुनुमानकवचमंत्रस्य
इमं स्मिरनुष्ठु पठेत् श्रीसीतारामदेवतासकस्योक्तपवन
कलत्रानुसीधारनाय जये पाठे विनियोगः ॥ श्रीरुनुमानप्रसाद
ायै नमो सप्त विनियोगः ॥ ॐ नमोनमो त्रिवीजवायुदेवता
तदाक्तिः ॥ ॐ अजनि सुरादिको लोकं श्रीरामचंद्रप्रसादसि

ॐ रुनुमानजायकवचस्त्रियते ॥ अजिनि स्वनदीरु
नवीराय नमः ॐ अस्य श्रीपंचमुखीवीररुनुमानकवचमंत्रस्य
इमं स्मिरनुष्ठु पठेत् श्रीसीतारामदेवतासकस्योक्तपवन
कलत्रानुसीधारनाय जये पाठे विनियोगः ॥ श्रीरुनुमानप्रसाद
ायै नमो सप्त विनियोगः ॥ ॐ नमोनमो त्रिवीजवायुदेवता
तदाक्तिः ॥ ॐ अजनि सुरादिको लोकं श्रीरामचंद्रप्रसादसि

कश्चिन्मन्त्रोऽयं विविधो गन्तव्योऽयं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 कुलसहितः ॥ यिनः शुभिनिमित्तो देवीपीठो ज्ञानपथो यथा ॥ १ ॥
 श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥
 श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥
 श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥ श्रीकामुद्राक्षेत्रीयः ॥

प्रादय र सो ह सो ॐ ॐ श्री ग नै रु द आ प मे च य र ॐ श्री स्वा न
ॐ श्री न ॐ स्वा हा स वि व न ॐ हं स रु द आ प मे च य र सो
ॐ ॥ ॐ श्री न क ण ड द्वा सा न मे च य र स्वा हा ॥ ॥ जे प ॥ ॐ
वा ला मु खि स र्वे ड आ नो वा चं द्र प ५ स न न म डि का
क न य बु धि वि ना स य ॐ ॐ स्वा हा ॥ १००८ ॥ श्री न ॥ ॐ श्री वा